(ऑनलाइन पाठ्य सामग्री)

वर्ग — स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)
सत्र — 2020 - 2023
पत्र — प्रथम
शीर्षक :— नाथ संप्रदाय का विकास

## नाथ संप्रदाय का विकास

नाथ संप्रदाय का विकास सिद्धों से हुआ है। राहुल सांकृत्यायन ने सिद्धों की परंपरा से ही नाथों का उद्भव माना है। सिद्ध लोग बौद्धों के महायान शाखा से विकसित वज्रयान शाखा के पोषक थे। वज्रयान में बौद्ध मत के साथ-साथ शैव धर्म एवं पंचमकारों को भी सम्मिलित कर लिया गया था। परवर्ती सिद्धों ने पंचमकारों के लाक्षणिक अर्थ को छोड़कर उन्हें अभिधेय अर्थ में अपनाना आरंभ कर दिया। परिणामतः सिद्ध-साधना नैतिक दृष्टि से पतन के कगार पर आ खड़ी हुई। नारी-सहचर्य, मैथुन, मद्यपान आदि सिद्ध-साधना के आवश्यक अंग माने जाने लगे। इसी सिद्ध परंपरा में मत्स्येन्द्रनाथ का प्रादुर्भाव हुआ। जब मत्स्येन्द्रनाथ इस कुत्सित साधना में लीन थे, तब उनके शिष्य गोरखनाथ ने उन्हें इस पंथ से उबारकर नए पंथ की ओर अग्रसर किया। इससे जुड़ा एक छंद गोरखबानी में मिलता है—

" गुरुजी ऐसा करम न कीजै, ताथैं अमी महारस छीजै।
दिवसे बाघनि मन कूँ मोहै, रति सरोवर सोखै।
जाणि बूझि रे मुरखि लोगा, घरि घरि बाघिन पोषै।
नदी तीर बिरषा नारी संग पुरषा, अलपजीवन की आस।
मनथैं उपजै मेर खिसि पड़ई, तांथै कंद बिनासा। "

इसी धारणा से 'नाथ संप्रदाय' का प्रादुर्भाव माना जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि 'नाथ-संप्रदाय' में सिद्धों की ~~वाममार्गी~~ वाममार्गी ~~उपासना~~ वासनापरक उपासना-पद्धति का त्याग करके उसके स्थान पर संयमी इंद्रिय अपनाते हुए महायान और शैव संप्रदाय के सिद्धांतों को स्वीकार किया।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नाथ संप्रदाय का विकास नवीं शताब्दी से माना है। जबकि पीतांबर दत्त बड़थ्वाल ने नाथ संप्रदाय का उद्भव दसवीं शताब्दी से माना है। नाथों की मठ परंपरा 13-14वीं शताब्दी तक चलती रही। पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की संत काव्यधारा का प्रादुर्भाव नाथ संप्रदाय से ही होता है।

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर मत्स्येन्द्र नाथ को नाथ संप्रदाय का आदिकवि माना जाता है किंतु जनश्रुतियों के अनुसार आदिनाथ (शिव) को नाथ संप्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। सत्य जनश्रुतियों पर नहीं टिका रहता है, लेकिन इससे इतना तो स्पष्ट होता है कि 'नाथ-संप्रदाय' का संबंध शैव-संप्रदाय से है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है कि नाथ-संप्रदाय के लिए योगमार्ग, योग-संप्रदाय, अवधूत मत, अवधूत संप्रदाय, सिद्ध मार्ग, आदि अन्य नामों का भी प्रचलन है। इस प्रकार यों ज्ञात होता है कि नाथ-संप्रदाय में बौद्ध मत, सिद्ध मत, शैव मत, योग-मार्ग, भक्ति-मार्ग आदि का समन्वय था। नाथ-

संप्रदाय की बारह शाखाओं का उल्लेख मिलता है, जिसमें सतनाथी, धर्मनाथी, रामनाथी, माननाथी, नागनाथी, कपिलनाथी, नटेश्वरीनाथी आदि प्रमुख हैं। इन शाखाओं के अनेक उपशाखाओं का भी उल्लेख मिलता है। नाथ लोग सेली, सुदरी, सींगी, मेखला, बघम्बर, कर्ण-मुद्रा आदि धारण करते थे। वे कान फाड़कर कुण्डल धारण करते थे अतः इन्हें 'कनफटा साधु' भी कहा जाता है।

'नाथ-साहित्य" की प्रधान विशेषता यह है कि इसमें विभिन्न मतों का समन्वय है। मूलतः शैव मत पर आधारित होते हुए भी बौद्ध दर्शन का पर्याप्त प्रभाव है। नाथ संप्रदाय में भारतीय योग साधना का भी सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इतना ही नहीं वैष्णव साधना-प्रणाली और कापालिक साधना-पद्धति का समन्वय भी नाथ संप्रदाय में दिखाई देता है। नाथों के समय तक भारत में मुसलमानों का आगमन हो चुका था। इसीलिए नाथों में हिंदू एवं मुसलमान दोनों प्रकार के शिष्य मिलते हैं।

डॉ० मेनका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
ए० पी० एस० एम० कॉलेज, बरौनी
ललित नारायण मिथिला विश्व० दरभंगा